शस्त्र नियंत्रण और निरस्त्रीकरण

1. प्रस्तावना

बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास ने मानव जीवन को जहाँ एक ओर सुगम बनाया है, वहीं दूसरी ओर विनाशकारी हथियारों के निर्माण ने पूरी मानवता को संकट में डाल दिया है। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध, और उसके बाद चले शीत युद्ध (Cold War) ने दुनिया को यह सिखाया कि हथियारों की बेलगाम होड़ केवल विनाश की ओर ले जाती है। इस पृष्ठभूमि में, वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए दो महत्वपूर्ण अवधारणाएँ उभर कर सामने आईं—**शस्त्र नियंत्रण (Arms Control)** और **निरस्त्रीकरण (Disarmament)**। ये दोनों प्रक्रियाएँ वैश्विक मंच पर युद्ध के जोखिम को कम करने और मानव जाति के अस्तित्व की रक्षा करने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

2. शस्त्र नियंत्रण का अर्थ और महत्व

शस्त्र नियंत्रण का अर्थ हथियारों को पूरी तरह से समाप्त करना नहीं है, बल्कि उनके विकास, उत्पादन, परीक्षण और तैनाती को विनियमित (Regulate) या सीमित करना है।

- **स्थिरता बनाए रखना:** इसका मुख्य उद्देश्य विरोधी देशों के बीच हथियारों का एक ऐसा संतुलन (Balance of Power) बनाना है जिससे कोई भी देश दूसरे पर हमला करने की हिम्मत न कर सके।
- **हथियारों की होड़ पर रोक:** यह देशों को एक-दूसरे से आगे निकलने की अंधी दौड़ में भारी वित्तीय संसाधन खर्च करने से रोकता है।
- **प्रमुख संधियाँ:** इसके तहत **परमाणु अप्रसार संधि (NPT)** और अमेरिका-रूस के बीच हुई **न्यू START (Strategic Arms Reduction Treaty)** जैसी ऐतिहासिक संधियाँ शामिल हैं, जिन्होंने परमाणु हथियारों की संख्या को एक तय सीमा में रखने में मदद की।

3. निरस्त्रीकरण का अर्थ और आवश्यकता

निरस्त्रीकरण एक अधिक व्यापक और आदर्शवादी प्रक्रिया है। इसका तात्पर्य मौजूदा हथियारों, सैन्य बलों और सैन्य सामाग्रियों को कम करना या उन्हें पूरी तरह से नष्ट करना है।

- **विनाशकारी हथियारों का अंत:** इसका अंतिम लक्ष्य दुनिया को सामूहिक विनाश के हथियारों (Weapons of Mass Destruction) से मुक्त कराना है।

Defence-HRPC

- **मानवीय दृष्टिकोण:** निरस्त्रीकरण का मानना है कि जब तक हथियार रहेंगे, तब तक युद्ध की संभावना बनी रहेगी। इसलिए, स्थायी शांति के लिए हथियारों का उन्मूलन जरूरी है।
- **प्रमुख सफलताएँ:** रासायनिक हथियार सम्मेलन (CWC) और जैविक हथियार सम्मेलन (BWC) इसके बेहतरीन उदाहरण हैं, जिनके तहत दुनिया भर में रासायनिक और जैविक हथियारों के भंडारण को बड़े पैमाने पर नष्ट किया गया है।

4. शस्त्र नियंत्रण और निरस्त्रीकरण में अंतर

यद्यपि दोनों का उद्देश्य शांति स्थापित करना है, लेकिन दोनों के दृष्टिकोण में अंतर है:

- **शस्त्र नियंत्रण** व्यावहारिक राजनीति (Realpolitik) पर आधारित है, जहाँ माना जाता है कि हथियार पूरी तरह खत्म नहीं हो सकते, इसलिए उन्हें प्रबंधित (Manage) किया जाए।
- **निरस्त्रीकरण** एक आदर्शवादी दृष्टिकोण है, जो हथियारों के पूर्ण उन्मूलन (Total Elimination) की वकालत करता है।

5. वैश्विक चुनौतियाँ

आज के समय में शस्त्र नियंत्रण और निरस्त्रीकरण के मार्ग में कई बड़ी चुनौतियाँ हैं:

- **अविश्वास की भावना:** शक्तिशाली देशों (जैसे अमेरिका, रूस, चीन) के बीच बढ़ता अविश्वास संधियों को कमजोर कर रहा है।
- **नई तकनीकें:** साइबर हथियार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) से चलने वाले ड्रोन और हाइपरसोनिक मिसाइलों जैसी नई तकनीकों ने नियंत्रण की परिभाषा को बदल दिया है।
- **गैर-राज्य तत्व (Non-State Actors):** आतंकवादी संगठनों के हाथों में घातक हथियारों का पहुँचना एक बड़ा खतरा बन गया है।

6. भारत का दृष्टिकोण

भारत हमेशा से वैश्विक और भेदभाव रहित निरस्त्रीकरण का समर्थक रहा है। भारत का मानना है कि परमाणु निरस्त्रीकरण सार्वभौमिक (Universal) होना चाहिए, यानी सभी देशों को समान रूप से अपने परमाणु हथियार छोड़ने होंगे। भारत की परमाणु नीति **"पहले उपयोग नहीं" (No First Use)** और **न्यूनतम विश्वसनीय निवारण (Minimum Credible Deterrence)** पर आधारित है, जो वैश्विक शांति के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

Defence- HRPG

7. निष्कर्ष

शस्त्र नियंत्रण और निरस्त्रीकरण केवल राजनीतिक मुद्दे नहीं हैं, बल्कि यह मानवता के अस्तित्व से जुड़े प्रश्न हैं। आज दुनिया भर में करोड़ों लोग गरीबी, भूखमरी और जलवायु परिवर्तन से जूझ रहे हैं। यदि हथियारों के निर्माण में खर्च होने वाले खरबों डॉलर को मानव कल्याण और सतत विकास में लगाया जाए, तो पृथ्वी को एक बेहतर स्थान बनाया जा सकता है। एक सुरक्षित भविष्य के लिए दुनिया के सभी देशों को आपसी मतभेदों को भुलाकर शस्त्र नियंत्रण और पूर्ण निरस्त्रीकरण की दिशा में ईमानदारी से प्रयास करने होंगे.

Defence- HRPG